डॉ० कविता कुमारी सिंह
हिन्दी विभाग
आर० एन० कॉलेज

B.A, Part I, (MIL)

प्रश्न— 'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता की राष्ट्रीय भावना :—

प्रस्तुत कविता माखनलाल चतुर्वेदी की श्रेष्ठ कविताओं में से एक है। उनकी राष्ट्रीय भावना संबंधी कविताओं से जनता इतनी प्रभावित हुई कि उन्हें 'एक भारतीय आत्मा' की उपाधि प्राप्त हुई। इस कविता में भावना की जो सच्चाई मिलती है वह बहुत कम कवियों में दिखाई पड़ती है। उनकी कविताओं

में राष्ट्रीयता की चेतना बड़ी प्रखर है। इनकी राष्ट्रीय भावना ने देशभक्ति की कल्पना पुष्प के रूप में की है। सच्चा देशभक्त न यश चाहता है और न वैभव, वह तो उन लोगों का काम आना चाहता है जो आजादी की लड़ाई में मर मिटने को तैयार हैं।

'पुष्प की अभिलाषा' शीर्षक कविता एक का युग संदेश भी है। इसमें कर्त्तव्य-पथ का प्राप्त होता है। मानो कवि कह रहा है कि परतंत्र के युग में नवयुवकों को कोमलता और सौंदर्य फँसकर राष्ट्र-धर्म भूलना नहीं चाहिए। यश तिष्ठा की कामना में देश को होम नहीं सकता। समृद्धि की लालसा तले देश भूल जाना अक्षम्य अपराध होगा।

इस कविता द्वारा कवि ने पराधीन देश की उमंग और लालसा को ध्वनित किया है। यह पुष्प विलास और कोमलता का पुतला नहीं, समर्पण और विसर्जन की समर्थ-सजीव मूर्ति है। यह दुःखी देश की क्षत धरती पर खिला हुआ पुष्प है। समस्याओं के विकराल मेघों से ढँपते हुए आकाश के नीचे इस पुष्प का विकास हुआ है। अतः इसमें राष्ट्र की दुःख दुर्दशा के आँसू हैं तथा राष्ट्र को स्वतंत्र करने की आकुलता है, बलिपथ पर बिछ जाने की लालसा है।

इस कविता में कवि ने राष्ट्रीय भावना से कोमल पुष्प को रंग दिया है। पुष्प की यह अभिलाषा नहीं है कि वह सुरबाला के आभूषणों में गूँथा जाय। उसे कोम
और सौंदर्य का साहचर्य नहीं चाहिए। वह प्रेमी की माला में भी गूँथना नहीं चाहता। सम्राटों के शव पर भी चढ़ाए जाने की लालसा भी

उसमें नहीं है। पुष्प चाहता है कि राष्ट्र के लिए कुछ करना, वह राष्ट्र के सैनिकों की पद-
चाहता है। बलि के पथ पर चढ़ते हुए सैनिकों
चरणों तले बिछ जाने की कामना उसे है। समृद्धि
लालसा तले देश-दशा को भूल जाना अक्षम्य अप
होगा। माता जंजीरों में जकड़ी रहे, सिसकती रहे और
कोटि-कोटि पुत्र वैभव के महल में सोये रहें — यह राष्
अपमान है, जाति का अपमान है, जीवन का व्यंग्य
अतः 'पुष्प की अभिलाषा' द्वारा कवि ने पराधी
की उमंग और लालसा को ध्वनित किया है
ष्प विलास और कोमलता का पुतला नहीं
और विसर्जन की समर्थ-सजीव मूर्ति है

कवि ने अत्यन्त कुशल ढंग से उन सैनिकों की वन्दना भी की है जो बलि पथ के दीवाने - राही हैं। संघर्ष ही उनकी साधना का मध्य पथ है और राष्ट्र के लिए विसर्जन हो जाना ही उनकी मंजिल है। कवि उनकी पद-वन्दना करता है। उनके चरणों की पवित्र धूल में अपना अस्तित्व सार्थक कर लेना चाहता है।

कवि का मूल-भाव है राष्ट्रहित और बलिदान। वीर भी बलि पथ का अडिग साधक है और पुष्प भी विसर्जन का इच्छुक है। अतः कविता हमारे भीतर सम्पूर्ण त्याग, पवित्र बलिदान और दिव्य राष्ट्रसेवा की भावना भर देता है।